नरम दिली का बयान (किताबुल रिकाक बुखारी शरीफ) /2

मौलाना मुहम्मद इमरान कासमी बिज्ञानवी.

एक हज़ार मुन्तखब हदीसे बुखारी शरीफ हिन्दी.

नोटः- 'हदीष की रिवायत का खुलासा है'.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

टॉपिक्स

*लम्बी लम्बी आरज़ू

*जिस्की उम्र साठ (६०) साल हो जाये

*इबादत में दरमियानी तरीका

*अल्लाह तआला से उम्मीद और डर दोनो रखना

लम्बी लम्बी आरज़ू

*रावी हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रदी:> रसूलुल्लाह ﷺ ने एक चौकोर लकीर खीचा और उस लकीर के दोनो तरफ कुछ और छोटी-छोटी लकीरे बनाई और फरमाया ये दरमियानी लकीर इन्सान है और ये चौकोर लकीर उस्की मौत है जो उसे घेरे हुवे है, और ये बाहर निकला हुवा लकीर उस्की आरज़ू व उम्मीद है और ये छोटी-छोटी

लकीरे आफते व हादसे है, अगर इस्से इन्सान बचा तो उस्मे फस गया अगर उस्से बचा तो इस्मे मुब्तला हो गया.
वजाहत- इन्सान ऐसी-ऐसी इच्छाये रखता है जो उमर भर पूरी नहीं हो सकती. इसलिये ऐसी इच्छाये आखिरत से इन्सान को गाफिल कर देती है, उन्से बचना चाहिये. (फत्हुल बारी)

*रावी हज़रत अनस रदी:> रसूलुल्लाहﷺ ने जमीन पर चन्द लकीरे और दायरे खीचे फिर फरमाया ये आदमी की आरजू है और ये उस्की उम्र है, इन्सान लम्बी आरजू के चक्कर में रहता है इतने में करीब वाला लकीर उसे आ-पोहचती है यानी मौत आ-जाती है.
वजाहत- रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया मुझे इच्छाओ की पैरवी और लम्बी तमन्नाओ का जियादा खतरा है, क्युकी इच्छा को पूरा करने की कोशिश में लगे-रहना इन्सान को हक से रोक देती है और लम्बी तमन्नाए आखिरत से गाफिल कर देती है. (फत्हुल बारी)

जिस्की उम्र साठ (६०) साल हो जाये

876 *बुखारी, रावी हज़रत अबू हुरैरह रदी:> रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया अल्लाह तआला ने उस आदमी के तमाम बहाने खत्म कर दिये जिसे लम्बी उम्र दी, यहा तक की वह साठ साल को पोहच गया.
वजाहत- जब काफिर चीख-चीखकर जहन्नम से निकलने का

मुतालबा करेंगे तो अल्लाह तआला फरमायेंगे क्या हमने तुम्हे इतनी उम्र ना-दी थी जिस्मे अगर तुम सबक लेना चाहते तो ले-सकते थे, और तुम्हारे पास सचेत करने वाला भी आ चुका था. अधिक तफसील के लिये पढये सूरे फातिर/३५, आयत/३७ की तफसीर.

*रावी हज़रत अबू हुरैरह रदी:> रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया बूढे आदमी का दिल दो चिझो के बारे में जवान रहता है दुन्या की मुहब्बत (दौलत के लालच) और लम्बी उम्र की इच्छा में.

वजाहत- इसी तरह की एक रिवायत हज़रत अनस (रदी) से भी मरवी है की आदमी तो बूढा हो जाता है, मगर उस्के नफ्स की दो खासियते और जियादा जवान और ताकतवर होती रहती है, एक दौलत की लालच और दूसरी लम्बी उम्र की चाहत.

इबादत में दरमियानी तरीका

*बुखारी, रावी हज़रत अबू हुरैरह रदी:> रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया तुम्मे से किसी को उस्के आमाल निजात ना देंगे,

सहाबा (रदी) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आपके आमाल भी नहीं? आपने फरमाया मुझे भी मेरे आमाल निजात नहीं देंगे मगर ये की अल्लाह तआला मुझे अपनी रहमत में ढाप ले. तुम्हे चाहिये की सही तरीके से अमल करते रहो, दरमियानी रास्ते पर हमेशगी इख्तियार

करो, हर सुबह और रात के पिछले हिस्से में कुछ इबादत करो. एतेदाल (दरमियानी चाल) इख्तियार करो. उस एतेदाल से तुम अपनी मंजिले मकसूद तक पोहच जावोगे.
वजाहत- जन्नत में दाखिल होना तो अल्लाह की रहमत से ही मुम्किन होगा, फिर जन्नत के दर्ज़े आमाल के मुताबिक तकसीम होगे और नेक आमाल ही अल्लाह की रहमत का जरया है. इसलिये अल्लाह की रहमत को जोश दिलाने के लिये नेक आमाल जरूरी है.

885 *बुखारी, रावी हज़रत आइशा रदी:> रसूलुल्लाहﷺ से सवाल किया गया की अल्लाह तआला को कौन सा अमल जियादा महबूब है? फरमाया जो हमेशा किया जाये चाहे थोडी मिक्दार में हो.
वजाहत- नेकी करने में इतनी तकलीफ उठावो जितनी ताकत हो. पसन्दीदा अमल वोही है जिस पर हमेशगी की जाये, लेकिन इस्का मतलब ये नहीं की अपनी सेहत से जियादा काम शुरू कर दो फिर उकताकर उसे छोड दो. (फत्हुल बारी)अल्लाह

तआला से उम्मीद और डर दोनो रखना

*रावी हज़रत अबू हुरैरह रदी:> रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया अगर काफिर को अल्लाह तआला के यहा की तमाम रहमतो का पता चल जाये तो कभी जन्नत से मायूस ना-हो, और अगर मोमिन को अल्लाह

तआला के यहा के हर किस्म के अजाब का मालूम हो जाये तो वह कभी जहन्नम से बे-खौफ ना-हो.

वजाहत- उम्मीद और खौफ की दरमियानी कैफियत का नाम ईमान है. अल्लाह तआला की रहमत से मायूस होना भी कुफ्र है और अपने आमाल पर पूरी तरह भरोसा और तकिया करना भी तबाही का सब्ब है. (फत्हुल बारी)